संज्ञा

ऋकारांत स्त्रीलिंग

संसारे व्यक्ते: जातीनां, वस्तूनां, स्थानानां, भावानां च नामानि संज्ञा भवन्ति।

अर्थात, किसी व्यक्ति, वस्तु स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

यथा -	महात्मा गाँधी	मेघा:
	छात्र:	सौन्दर्यम्

सर्वप्रथम हम ऋकारांत शब्दों के बारे में जानेंगे। जैसा कि शब्द से ही पता चल रहा है –

ऋकारांत अर्थात जिसके अन्त में '**ऋ**' हो वे शब्द ऋकारांत कहलाते हैं।

जैसे – मातृ, स्वसृ आदि।

आइए अब हम ऋकारांत स्त्रीलिंग शब्द मातृ (माता) तथा स्वसृ (बहन) के रुपों को देखें। तत्पश्चात् हम इनके आधार पर कुछ वाक्य बनाएगें।

सबसे पहले हम एक नज़र 'मातृ' शब्द पर डालते हैं।

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा विभक्ति	माता	मातरौ	मातर:
द्वितीया विभक्ति	मातरम्	मातरौ	मातृ:
तृतीया विभक्ति	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभि

चतुर्थी विभक्ति	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्य:
पञ्चमी विभक्ति	मातु:	मातृभ्याम्	मातृभ्य:
षष्ठी विभक्ति	मातु:	मात्रो:	मातृणाम्
सप्तमी विभक्ति	मातरि	मात्रो:	मातृषु
सम्बोधन विभक्ति	हे मात:!	हे मातरौ!	हे मातर:!

स्वसृ (बहन)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा विभक्ति	स्वसा	स्वसारौ	स्वसार:
द्वितीया विभक्ति	स्वसारम्	स्वसारौ	स्वसृ:
तृतीया विभक्ति	स्वस्रा	स्वसृभ्याम्	स्वसृभि:
चतुर्थी विभक्ति	स्वस्रे	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्य:

पञ्चमी विभक्ति	स्वसु:	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्य:
षष्ठी विभक्ति	स्वसु:	स्वस्रो:	स्वसृणाम्
सप्तमी विभक्ति	स्वसरि	स्वस्रो:	स्वसृषु
सम्बोधन विभक्ति	हे स्वस:!	हे स्वसारौ!	हे स्वसार:!

आइए अब हम इनके आधार पर कुछ वाक्य बनाने का प्रयास करें।

तव माता कुत्र असि? (प्रथमा विभक्ति)

तुम्हारी माता कहाँ हैं?

मम माता स्वसा च बहि: अगच्छताम्।

मेरी माता और बहन बाहर गयी हैं।

स: मात्रा सह भोजनं करोति। (तृतीया विभक्ति)

वह माता के साथ भोजन करता है।

सा स्वस्रा सह गीतं गायति। (तृतीया विभक्ति)

वह बहन के साथ गीत गाती है।

अहं मात्रे नमामि। (चतुर्थी विभक्ति)

मैं माता को नमस्कार करता हूँ।

अस्मिन् चित्रे स्वसारम् उभयत मम बन्धा: सन्ति। (द्वितीया विभक्ति)

इस चित्र में मेरी बहन के दोनों ओर भाई हैं।

आप इन शब्द रुपों की सहायता से सरल वाक्य बनाने का प्रयास करें। इन रुपों को आप याद करने की बजाय यदि इनका प्रयोग करेंगे तो ये जल्दी ही आपको याद हो जाएंगे।

हलन्त पुँल्लिङ्ग

वे शब्द जिनके अन्त में हलन्त लगता है, हलन्त शब्द कहलाते हैं।

जैसे: राजन्, विद्वान्, आत्मन्।

आइए अब हम 'राजन्' शब्द के रुपों को देखें।

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा विभक्ति	राजा	राजानौ	राजान:
द्वितीया विभक्ति	राजानम्	राजानौ	राज्ञ:
तृतीया विभक्ति	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभि:
चतुर्थी विभक्ति	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्य:
पञ्चमी विभक्ति	राज्ञ:	राजभ्याम्	राजभ्य:
षष्ठी विभक्ति	राज्ञ:	राज्ञो:	राज्ञाम्
सप्तमी विभक्ति	राज्ञि, राजनि	राज्ञो:	राजसु

सम्बोधन विभक्ति	हे राजन्!	हे राजानौ!	हे राजानः!

अब हम इनके आधार पर कुछ वाक्य बनाने का प्रयास करेंगे।

एकदा एक: महापराक्रमी राजा आसीत्। (प्रथमा विभक्ति)

एक बार एक महापराक्रमी राजा था।

स: राजसु श्रेष्ठ: आसीत्। (सप्तमी विभक्ति)

वह राजाओं में श्रेष्ठ था।

प्रजा: राजानम् पूज्यन्ति स्म। (द्वितीया विभक्ति)

प्रजा राजा को पूजती थी।

राज्ञ: एक दुष्ट मन्त्री: अपि आसीत्। (षष्ठी विभक्ति)

राजा का एक दुष्ट मंत्री भी था।

एकदा स राजभि: सह वनं गच्छति स्म। (तृतीया विभक्ति)

एक बार वह राजाओं के साथ वन गया था।

इसी प्रकार आप उपरोक्त शब्द रुपों की सहायता से कुछ और वाक्य बनाने का अभ्यास करें।